2025 यादगार दिवस सम्मिश्रण सम्मेलन के लिए मुख्य कथन

बाइबल एक प्रणय है,
सबसे शुद्ध और सबसे पवित्र अर्थ में,
एक सार्वभौमिक जोड़े की—मसीह में परमेश्वर दुल्हे के रूप में
और परमेश्वर के छुड़ाए हुए लोग दुल्हन के रूप में—प्रभु की पुनः प्राप्ति का लक्ष्य।

पुन:प्राप्ति में प्रभु का प्राथमिक कार्य
हमें उसकी महिमामय दुल्हन बनने के लिए तैयार करने का उसका वास्तविक कार्य है;
इफिसियों 5:26 में बताए गए निरंतर, स्वभावगत पवित्रीकरण के अलावा,
दुल्हन को तैयार करने का कोई तरीका नहीं है और इसलिए,
प्रकाशितवाक्य 19:7-9 को पूरा करने का कोई तरीका नहीं है।

जैसा कि नए नियम में उपयोग किया गया है,
***परिपक्व* शब्द का तात्पर्य विश्वासियों के मसीह के जीवन में पूर्ण-विकसित और सिद्ध होने से है,**
जिसे उन्होंने पुनरुज्जीवन के समय प्राप्त किया था।

प्रभु की पुन:प्राप्ति मसीह की दुल्हन की तयारी के लिए है;
अंतत, हम अद्भुत शूलम्मिन में अनुरूप होंगे, जो,
सुलैमान की प्रतिलिपि के रुप में, मसीह की अर्धांगिनी, दुल्हन के रुप में
नये यरुशलेम की सबसे महान और परम चित्र है।

यादगार दिवस सम्मिश्रण सम्मेलन के लिए
संदेशों की रूपरेखा
मई 23-26, 2025

सामान्य विषय:
दुल्हन की तयारी

संदेश एक

दुल्हन—प्रभु की पुन:प्राप्ति का लक्ष्य

पवित्रशास्त्र पठन: प्रक. 19:7-9; यूह. 1:29; 3:29; श्रेष्ठ. 1:2-3; 8:14

I. बाइबल एक प्रणय है, सबसे शुद्ध और सबसे पवित्र अर्थ में, एक सार्वभौमिक जोड़े की—मसीह में परमेश्वर दुल्हे के रूप में और परमेश्वर के छुड़ाए हुए लोग दुल्हन के रूप में—प्रभु की पुनःप्राप्ति का लक्ष्य।

A. सदियों से परमेश्वर का मनुष्य के साथ प्रणय रहा है; उसने मनुष्य को एक अर्धांगिनी पाने के उद्देश्य से सृजा—उत. 1:26।

B. परमेश्वर एक प्रेमी है, और उसने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में प्रेमी के रुप में सृजा, इसका अर्थ है की उसने हमें सृजा ताकि हम उससे प्रेम कर सके—मर. 12:30; इफ. 3:14-19।

C. सम्पूर्ण बाइबल एक दिव्य प्रणय है, और श्रेष्ठगीत इस प्रणय का संगृहीत रुप है—1:2-3; 8:14:

1. बाइबल एक प्रेमपूर्ण पुस्तक है, और प्रभु के साथ हमारा सम्बन्ध और अधिक प्रेमपूर्ण होने की जरूरत है।
2. यदि हमारे और प्रभु यीशु के बीच में कोई प्रणय नहीं है, फिर हम धार्मिक मसीही हैं, न की प्रेमपूर्ण मसीही—श्रेष्ठ. 1:2-3।
3. सर्वस्व में, *प्रणय* एक दिव्य प्रेमालाप का शब्द है; बाइबल में हम देखते हैं की परमेश्वर हमारे प्रेम की खोजी कर रहा है—2 कुर. 11:2।
4. श्रेष्ठगीत एक प्रणय से भी अधिक है, यह एक शानदार प्रणय है।

D. हम जिससे भी प्रेम करते हैं, हमारा पूरा हृदय, यहाँ तक कि हमारा पूरा अस्तित्व, उसी पर केन्द्रित, व्यस्त और उसी के द्वारा आविष्ट होता है—1 तीम. 6:10-11; 2 तीम. 3:2-4; 4:8, 10अ; तीत. 1:8:

1. "परमेश्वर से प्रेम करने का अर्थ है अपना पूरा अस्तित्व—आत्मा, प्राण और देह, हृदय, प्राण, मन और शक्ति के साथ (मर. 12:30)—पूरी रीति उसी पर लगा देना, अर्थात् अपना पूरा अस्तित्व उसी में लगा देना और उसी में खो जाना" (1 कुर. 2:9 पर पादटिप्पणी 3)।
2. प्रभु यीशु से प्रेम करने का अर्थ है उसकी सराहना करना, अपने अस्तित्व को उसकी ओर निर्देशित करना, उसके प्रति खुलना, उसका आनंद करना, उसे पहला स्थान देना, उसके साथ एक होना, उसे जीना और उसके जैसा बन जाना—मत. 26:6-13 2 कुर. 3:16; मर. 12:30; कुल. 1:18; 1 कुर. 6:17; फिलि. 1:20-21; *भजन*, #477, छंद 2।

II. प्रकाशितवाक्य 19:7-9 मसीह को दूल्हे के रूप में प्रकट करता है:

A. मेम्ने का विवाह परमेश्वर के नए नियम के गृहप्रबन्ध की पूर्णता का परिणाम है, जिसका उद्देश्य मसीह के न्यायिक छुटकारे और उसके दिव्य जीवन में जैविक उद्धार के माध्यम से उसके लिए एक दुल्हन, कलीसिया, प्राप्त करना है—उत. 2:22; रो. 5:10; प्रक. 19:7-9; 21:2, 9-11।

B. प्रकाशितवाक्य 19 में मसीह की दुल्हन सभी जयवन्त लोगों से बनी है—आआ. 7-9; प्रसं. उत. 2:22; मत. 16:18।

C. सभी जयवन्त लोग अपने आरंभिक और नए चरण में एक हजार वर्षों के लिए मसीह की दुल्हन के रूप में नया यरूशलेम होंगे—प्रक. 19:7।

D. अंततः, सभी विश्वासी नये यरूशलेम को परिपूर्ण करने और पूरा करने के लिए नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में अनन्त काल के लिए मसीह की पत्नी के रूप में जयवन्त लोगों के साथ शामिल हो जाएंगे—21:2, 9-11।

III. दुल्हन प्रभु की पुन:प्राप्ति लक्ष्य है—19:7-9:

A. "मेमने का विवाह आ पहुंचा है"—आ. 7ब:

1. अपने सुसमाचार की शुरुआत में, यूहन्ना मेम्ने और दूल्हे की बात करता है, और प्रकाशितवाक्य में वह कहता है कि मेम्ने का विवाह आ पहुंचा है—यूह. 1:29; 3:29।
2. अधिकांश संतों के उठा लिए जाने (प्रक. 14:16; 1 थिस. 4:15-16) और मसीह के न्याय आसन पर इनाम देने के लिए (प्रक. 11:18; 2 कुर. 5:10) न्याय के बाद, तुरंत बाद की घटनाओं में मेम्ने का विवाह शामिल होना चाहिए (प्रका. 19:7ब):
   a. यदि हमें मसीह के न्याय आसन पर इनाम मिलता है, तो हम विवाह भोज में भाग लेंगे।
   b. यदि हमें इनाम नहीं मिलता है, लेकिन प्रभु द्वारा अस्वीकृत कर दिया जाता है, तो हम नष्ट नहीं होंगे, बल्कि 1 कुरिन्थियों 3:15 में वर्णित नुकसान उठाएँगे।

B. "उसकी पत्नी ने अपने आप को तैयार कर लिया है"—प्रक. 19:7स:

1. *उसकी पत्नी* कलीसिया (इफ. 5:24-25, 31-32), मसीह की दुल्हन (यूह. 3:29) को संदर्भित करती है।
2. प्रकाशितवाक्य 19:8-9 के अनुसार, पत्नी, मसीह की दुल्हन, सहस्राब्दी के दौरान केवल जयवन्त विश्वासियों से मिलकर बनी है, जबकि 21:2 में दुल्हन, पत्नी, सहस्राब्दी के बाद अनंत काल के लिए सभी बचाए गए संतों से बनी है।
3. दुल्हन की तैयारी जयवन्तों के जीवन में परिपक्वता पर निर्भर करती है—19:7; इब्र. 6:1; फिलि. 3:12-15; इफ. 4:13।
4. हमें नए यरूशलेम को मसीह की दुल्हन के रूप में सुशोभित और परिपूर्ण करने की आवश्यकता है, जिसमें परमेश्वर पिता सोने के रूप में, परमेश्वर पुत्र मोती के रूप में, और परमेश्वर आत्मा बहुमूल्य पत्थरों के रूप में हो—प्रक. 21:2, 19अ; 1 कुर. 3:12; श्रेष्ठ. 1:10-11।
5. जयवन्त व्यक्ति अलग-अलग व्यक्ति नहीं होते बल्कि एक सामूहिक दुल्हन होते हैं।
6. जयवन्त न केवल जीवन में परिपक्व होते हैं बल्कि एक दुल्हन के रूप में एक साथ मिलकर निर्मित होते हैं।

C. "उसे चमकदार, स्वच और महीन मलमल पहेनने को दिया गया है; यह मलमल तो संतों के धनर्मिकता के कार्य है"—प्रक. 19:8:

1. *स्वच्छ* स्वभाव को संदर्भित करता है, और *चमकदार* अभिव्यक्ति को संदर्भित करता है।
2. "धार्मिकता" के लिए अनुवादित यूनानी शब्द का अनुवाद "धर्मी कार्य" भी किया जा सकता है।
3. धार्मिकता उस धार्मिकता को संदर्भित नहीं करती है जो हमें अपने उद्धार के लिए प्राप्त हुई है—1 कुर. 1:30।
4. हमारे उद्धार के लिए हमें जो धार्मिकता प्राप्त हुई है वह वस्तूपरक है और हमें धार्मिक परमेश्वर की आवश्यकता को पूरा करने में सक्षम बनाती है, जबकि प्रकाशितवाक्य 19:8 में जयवन्त होते संतों की धार्मिकता व्यक्तिपरक है (फिलि. 3:9) और उन्हें जयवन्त मसीह की आवश्यकता को पूरा करने में सक्षम बनाती है।
5. इस प्रकार, महीन मलमल हमारे जयवन्त होते जीवन, हमारे जयवन्त होते जीवन को इंगित करता है; यह मसीह है जिसे हम अपने अस्तित्व से जीते हैं।

D. "धन्य हैं वे, जो मेम्ने के विवाह भोज में बुलाए गए हैं...ये परमेश्वर के सत्य वचन हैं"—प्रक. 19:9:

1. मेम्ने का विवाह भोज परिणय भोज है, एक हजार वर्ष का राज्य, जो कि परमेश्वर की दृष्टि में एक दिन है, जो जयवन्त होते विश्वासियों के लिए एक इनाम है—आ. 9; मत. 22:2, 11-14; 2 पत. 3:8।
2. मसीह के विवाह भोज में बुलाया जाना, जो जयवन्त होते विश्वासियों को सहस्राब्दी के आनंद में ले जाएगा, धन्य होना है—प्रक. 19:9।
3. प्रकाशितवाक्य 19:9 में मेम्ने का विवाह भोज मत्ती 22:2 में परिणय भोज है; यह जयवन्त होते विश्वासियों के लिए एक इनाम होगा:
   a. बुलाए जाने का अर्थ है उद्धार प्राप्त करना (रो. 1:7; 1 कुर. 1:2; इफ. 4:1), जबकि चुने जाने का अर्थ है इनाम प्राप्त करना।
   b. केवल जयवन्त लोगों को ही उनके लिए इनाम के रूप में विवाह भोज में बुलाया जाएगा; सभी बचाए गए लोग इसमें भाग नहीं लेंगे।
   c. जयवन्त होते विश्वासी, जिन्हें मेम्ने के विवाह भोज में बुलाया जाएगा, वे मेम्ने की दुल्हन भी होंगे—प्रक. 19:8-9।